Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SISRRJ | Volume 1 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

बौद्ध धर्म के कतिपय प्रमुख स्थल

डॉ0 अजिता ओझा
73ई, ओम गायत्री नगर, इलाहाबाद

छठीं शताब्दी ई0 पू0 का एक विशिष्ट योगदान बौद्धधर्म है। इसके प्रवर्तक महात्मा गौतम बुद्ध सरयू–अचिरावती घाटी में अवतरित हुए और यहीं अंतिम सांसे भी लीं। भारत देश के बाहर करोड़ों लोगों के लिए यह देश महज बुद्ध की भूमि है और एशिया के अधिकांश जनता की दृष्टि में बौद्ध धर्म ही भारत की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लंका, बर्मा, थाईदेश और हिन्द–चीन के लोग आज भी बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं बौद्ध अभिप्रायों के बिना बर्मा, थाईदेश, कोरिया, जापान और चीन की वास्तु एवं ललित कला अपनी पूर्ण समृद्धि नहीं प्राप्त कर सकती थी।

लुम्बिनी–

इस महान धर्म के प्रवर्तक महात्माबुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी नामक ग्राम है। कालान्तर में यहां मौर्य सम्राट अशोक ने बुद्ध की स्मृति में एक प्रस्तर स्तम्भ स्थापित करवाया जिस पर यह उत्कीर्ण है कि यहीं शाक्यमुनि बुद्ध उत्पन्न हुए थे–'हिदबुधेजाते–शाक्यमुनीति'/अशोक के रूम्मिनदेई स्तम्भ लेख में यह बताया गय है कि अपने राज्याभिषेक के 20वें वर्ष में राजा अशोक स्वयं वहां गया था और उसने इस स्थान की पूजा की थी, क्योंकि बुद्ध यहां पैदा हुए थे।

बुद्ध के पिता शुद्धोधन तत्कालीन कपिलवस्तु गणराज्य के शाक्यवंशी शासक थे। इसी शाक्य गणराज्य का अपने पड़ोसी कोलियों के साथ सिंचाई के निमित्त रोहिणी नदी के जल को लेकर बहुधा विवाद और संघर्ष हो जाया करता था, ऐसा उल्लेख मिलता है। बौद्ध संघ में प्रवेश लेने वाली प्रथम भिक्षुणी बुद्ध की विमाता महाप्रजापती गौतमी इसी गणराज्य की निवासिनी थीं। इसी गणराज्य में एक बार बुद्ध जब भ्रमण करते हुए आये तो अपने पिता, पत्नी, पुत्र सहित राज परिवार के सभी सदस्यों को उपदेश देने की अविस्मरणीय ऐतिहासिक घटना घटी थीं।

बोधगया–

बौद्ध तीर्थ स्थलों में बोधगया का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। गौतम बुद्ध ने इस भूमि पर ज्ञानार्जन किया था, फलतः यह सम्पूर्ण क्षेत्र बौद्ध धर्मावलम्बियों के लिए सबसे पवित्र एवं उच्च स्थान रखता है। बोधगया प्राचीन निरंजना नदी जिसे वर्तमान में ''फाल्गु'' के नाम से जाना जाता है, के तट पर महाबोधि के चारों ओर और प्राचीन उरूवेला नामक गांव के निकट यह गांव बसा हुआ है। बी0एम0 बरूआ के अनुसार प्राचीन उरूवेला ही बोधगया का क्षेत्र है जिसके अन्तर्गत बोधिवृक्ष व समीपवर्ती क्षेत्र का आते हैं। बोधगया प्राचीनकाल से हिन्दुओं का पवित्र स्थल रहा है। पुराणों में इसे गयासुर नामक दैत्य का निवास बताया गया है जिसे भगवान विष्णु ने यहां से निकाला था। महाभारत तथा अश्वघोष कृत बुद्धचरित से प्रकट होता है कि यहां महर्षि गय का आश्रम था, इन्हीं महर्षि गय के नाम पर यह स्थल कालान्तर में गया कहा जाने लगा। परन्तु बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति स्थल होने के कारण यह स्थल आज बोधगया के नाम से विश्व विख्यात है। सम्राट अशोक के अभिलेखों में इसका नाम ''संबोधि'' के रूप में मिलता है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने वर्णन में इसका नाम ''महाबोधि'' दिया है। 1234 ई0 में बोधगया यात्रा पर आये तिब्बती तीर्थयात्री धर्मस्वामी ने इसका नाम ''व्रजासन'' बताया है। लामा तारानाथ ने भी इसे वज्रासन के रूप में संबोधित किया है। कुछ विद्वानों के अनुसार बोधगया नाम सर्वप्रथम अमरदेव के अभिलेख में पाया गया है। वर्तमान समय में बिहार प्रान्त का यह पवित्र बौद्ध तीर्थ स्थल महाबोधि के नाम से जाना जाता है।

बोधगया का इतिहास और उसकी परम्परा में बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति से जुड़ी हुई है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह ज्ञात होता है कि ई0पू0 259 में महान बौद्ध सम्राट अशोक ने इस स्थल की यात्रा की थी और यहां निर्माण कार्य कराया था। बोधगया में प्रथम मंदिर का निर्माण अशोक द्वारा ही कराया गया था। भरहुत से प्राप्त एक अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि अशोक ने बोधगया में एक हस्ति–स्तम्भ, वज्रासन और बोधिवृक्ष के चारों ओर दीवार का निर्माण कराया था। वर्तमान समय का महाबोधि मंदिर दूसरी शताब्दी में निर्मित किया गया है जिसका निर्माण सम्भवतः अशोक द्वारा निर्मित मंदिर के खण्डहरों पर किया गया था। लेकिन जिस स्थान पर बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति हुयी थी वह स्थान ''वज्रासन'' अशोक द्वारा ही निर्मित हैं। वस्तुतः इस पवित्र स्थल का नाम महाबोधि के रूप में कब प्रचलन में आया इसका निश्चित समय ज्ञात नहीं है। अशोक ने अपने अभिलेख में इसे संबोधि के रूप में इंगित किया है। सन् 409 ई0 में इस स्थान पर आये फाह्यान ने इसके नाम का कोई उल्लेख नहीं किया है लेकिन उसके दो शताब्दी बाद आये ह्वेनसांग ने

इसका नाम महाबोधि विहार के रूप में उल्लिखित किया है। तदन्तर यह नाम बोधगया के कई अभिलेखों में प्राप्त होता है। बोधगया के संदर्भ में ह्वेनसांग लिखता है ''बोधिवृक्ष'' की चारदीवरी के बायें द्वार के बाहर महाबोधि संघाराम है। यह श्रीलंका के राजा द्वारा बनवाया गया था। इस भवन में छः बड़ें कमरे हैं तथा मंदिर की तीन मंजिली मीनारें हैं। इस विहार में 1000 से अधिक भिक्षु हैं जो स्थविर परम्परा के महायानी है तथा विनयपालक में परिशुद्ध हैं।''

श्रावस्ती–

छठीं शताब्दी ई0पू0 का एक अन्य सुविख्यात क्षेत्र है श्रावस्ती। बौद्ध भाष्यकार बुद्धघोष के अनुसार मूलतः सवत्थ नामक ऋषि का आवास स्थान होने के कारण इस नगर का नाम सावत्थी (श्रावस्ती) पड़ा, महात्मा बुद्ध के जीवन का अधिकांश समय लगभग 25 वर्ष यहां बीता और सर्वाधिक उपदेश बुद्ध ने यहीं से दिये। महात्मा बुद्ध की ख्याति दूर–दूर तक यहीं से फैली यहां तक कि पश्चिम भारत के प्रसिद्ध बन्दरगाह सोपारा का एक धनी व्यापारी पूर्ण दीक्षा प्राप्त करने के लिए सोपारा से यहां तक आया था।

श्रावस्ती के श्रेष्ठि सुदत्त (अनाथपिण्डक) ने 18 कोटि स्वर्ण मुद्रायें लदवाकर जेत उद्यान की भूमि पर बिछवा कर इस उद्यान का क्रय किया था और इसे महात्मा बुद्ध को दान में दिया था। भरहुत स्तूप की एक मूर्ति पर इस दान का दृश्य अंकित है–''जेतवन अनाथपेडिको देति कोटि सम्ण्येयन केता'' (अनाथपिण्डक कोटि धन से जेतवन क्रय करके दान करता है)।

अंग जनपद के भद्दिय ग्राम के सेठ की दुहिता विशाखा की आर्थिक सहायता और संरक्षण में यहां एक विशाल विहार का भी निर्माण करवाया गया था। वह नित्य इस विहार में बुद्ध का उपदेश सुनने आती थी। इन्हीं की आर्थिक सहायता से श्रावस्ती में पूर्वाराम नामक एक अन्य विहार भी बना, जहां बुद्ध ठहरते थे।

श्रावस्ती की दो अन्य मर्मस्पर्शी कथायें निम्न है–

1. बुद्ध ने स्वयं अपने हाथ से गर्म जल का उपयोग कर त्वचा रोग से ग्रस्त और पीड़ित तिस्स नामक भिक्षु की परिचर्चा की थी और मानवप्रेम तथा जनसेवा का उदाहरण सभी भिक्षुओं के समक्ष प्रस्तुत करते हुए उन्हें आपस में एक दूसरे के माता–पिता बनने की शिक्षा दी थी।

2. श्रावस्ती में ही निर्ममता और जघन्यता के लिए कुख्यात डाकू अंगुलिमाल का महात्मा बुद्ध की शिक्षा से हृदय परिवर्तन हुआ और वह बौद्ध भिक्षु बन गया। एक बार जब प्रसेनजित महात्माबुद्ध के दर्शन के लिए आये और डाकू अंगुलिमाल को वहां बैठा देख भयभीत हुए, तब महात्मा बुद्ध ने स्वयं उन्हें आश्वस्त किया कि अंगुलिमाल अब बौद्ध धर्मानुयायी और सज्जन हो गया है जब प्रसेनजित उससे प्रभावित होकर उसे वस्त्र तथा अन्य वस्तुएं प्रदान करनी चाही, तो अंगुलिमाल ने विनम्रता पूर्वक उसे यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि ''बस राजन! मेरे पास अपने 3 चीवर हैं।''

सातवीं शताब्दी ई0 में श्रावस्ती में बौद्ध धर्म के ह्रास की प्रक्रिया देखेन को मिलती है। ह्वेनसांग के विवरण के अनुसार वहां लगभग 100 विहार थे, परन्तु उनमें से अधिकांश अब खण्डहर मात्र रह गये थे। जो बचे भी थे, उनमें हीनयान की सम्मितीय शाखा के केवल कुछ भिक्षु ही रह गये थे। लेकिन कालान्तर में वहां बौद्ध धर्म की कुछ गतिविधियों देखने को मिलती हैं। श्रावस्ती स्थित जेतवन आठवीं–नवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म का केन्द्र बना रहा, ऐसा अभिलेखिक साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है। गोविन्दचन्द्र गाहड़वाल के वि0सं0 1186 (1129 ई0) के सहेत–महेत ताम्रपत्र लेख से यहां बारहवीं शताब्दी ई0 तक बौद्ध धर्म के शिव और वासुदेव की अर्चना कर और अग्नि को हविष समर्पित कर माता–पिता तथा स्वपुण्याधिवृद्धि हेतु उत्कल–देशीय सौगत परिव्राजक शाक्यरक्षित और उनके शिष्य चोड़–देशीय सौगत परिव्राजक महापण्डित वागीश्वररक्षित से परितुष्ट होकर बुद्ध भट्टारक की पूजा–अर्चना वाले श्रावस्ती जेतवन विहार को छह गांव दान दिया।

कुशीनारा–

मल्लों की राजधानी के रूप में विख्यात इस नगर का प्राचीन नाम कुशावती था चीनी साक्ष्यों ने इसे कियु–शि–न–की–लो कहा गया है। बुद्ध को यहीं पर परिनिर्वाण प्राप्त हुआ था जिसकी पुष्टि अशोक के आठवें शिलालेख से भी होती है। बुद्ध के काल में यह राजगृह, वैशाली अथवा श्रावस्ती की तरह एक प्रथम कोटि का नगर नहीं था। यह बात बुद्ध के प्रति आनन्द के इस कथन से ज्ञात होती है कि ''तथागत को जंगल के बीच इस छोटे कस्बे में, इस उपनगर में नहीं मरना चाहिए।'' यहां कुछ ही लोग रहते थे और उपवन निर्जन एवं अनुर्वर थे। दीघनिकाय के महापरिनिब्बानसुत्त के अनुसार बुद्ध पावा में चुण्ड कुमारपुत्त के यहां सूकर–मद्दव खाने के बाद पावा से कुशीनारा गये। कुशीनारा के मल्लों का अपना संथागार था जहां पर राजनीतिक एवं धार्मिक सभी विषयों पर विवाद

होते थे। जब बुद्ध को उनकी अन्तिम वेला आसन्न प्रतीत हुई और कुशीनारा के मल्लों के पास उन्होंने आनन्द से एक संदेह भेजा उस समय वे अपने संथागार में जनकार्यों पर विचार कर रहे थे। मल्लों ने उनके भाग में आये बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप का निर्माण करवाया तथा एक भोज दिया।

संदर्भ सूची

1. अशोक का रूम्मिनदेई स्तम्भ लेख विवरण
2. डॉ0 राजबली पाण्डेय, गोरखपुर जनपद के क्षत्रियों का इतिहास
3. दीघनिकाय
4. महापरिनिर्वाण सुत्त
5. राजकुमार दीक्षित, कुशीनारा
6. संयुक्त निकाय
7. सुत्त निकाय